# “मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन”

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा की हिन्दी विषय की

पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध की

**रूपरेखा**


**निर्देशिका**
प्रो. शर्मिला सक्सेना

**शोधार्थी**
प्रतीक्षा

**हिन्दी विभाग, कला संकाय**

**दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग आगरा- 282005**


**2023**

**मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा– साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन**

**शोध परिचय –**

यथार्थ के धरातल पर साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, दर्पण में वही प्रतिबिंब परिलक्षित होता है जो उसके सम्मुख रखा होता है। समाज में जो घटित होता है उसका सीधा प्रभाव हमारे साहित्य पर दृष्टिगत होता है। साहित्यकार समाज का एक अभिन्न अंग माना जाता है। वह साहित्य के हाशिए पर समाज का प्रतिनिधित्व करता है। कहना समीचीन होगा कि वह समाज की विद्रूपताओँ को उजागर करने का प्रयास करता है।

कथा- साहित्य जन समुदाय तक वास्तविकता को पहुँचाने का सशक्त माध्यम माना जाता है। साहित्य में अनेक विधाएं होती है साहित्यकार अपनी रुचि के अनुसार विधा को चयनित कर उसमें अपने भावों को उकेरता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने यद्यपि साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है, पर कथा साहित्य में उनका रुझान अधिक प्रकट हुआ है। मुझे भी इनका कथा- साहित्य रुचिकर लगा और मैंने अपनी शोध- निर्देशिका के निर्देशानुसार इस पर काम करने का निश्चय किया।

सन् 1900 ई. में ऑस्ट्रिया के सिगमंड फ्रायड और उनके शिष्य अलफ्रेड एडलर तथा कार्ल गुस्ताब युंग ने मिलकर मनोविश्लेषणवाद का विकास किया। फ्रायड कहते हैं कि मानसिक एवं स्नायविक विकारों के परिप्रेक्ष्य में जो सिद्धांत दिया गया वो मनोविश्लेषणवाद कहलाया। इसी से मनोविश्लेषणवाद शब्द की उत्पत्ति हुई। फ्रायड जब मानसिक रोगियों के साथ सम्मोहन की क्रिया करते थे तो पुराने अनुभव तरोताजा हो जाते थे। शैशवावस्था में मनुष्यों में केवल इड (ID) कुंठा ही विकसित होती है, इसलिए दमन करने का प्रश्न ही नहीं उठता, पर जैसे जैसे सामाजिक और नैतिक दबाव बढ़ने लगते हैं, तब अहम और सुपर अहम का विकास भी होने लगता है। इससे स्वाभाविक कामवृत्ति दमित होने लगती है। हमारे अंदर अचेतन मानस का निर्माण इन्हीं दमित भावनाओं से होता है। फ्रायड ने माना है कि शिशुओं के अंदर कामवृत्ति की इच्छा अपने माता-पिता तथा भाई-बहनों को देखकर उत्पन्न होती है। पर सामाजिक और नैतिक निषेधों के कारण यह वृत्ति पनप नहीं पाती। यही वृत्ति आगे जाकर मनुष्य के मन में कुंठाएं उत्पन्न करती है। इडिपस कुंठा का इस सिद्धांत में अत्यधिक महत्त्व है। जो ग्रीक नायक “इडिपस” के नाम पर है।

फ्रायड के सहयोगी एडलर कामवृत्ति से अधिक महत्त्व 'अहम' को देते हैं। एडलर कहते हैं कि आत्म- स्थापन की प्रवृत्ति ही प्रमुख है, कामवृत्ति नहीं। मानसिक स्नायविक रोग का मूल कारण हीनत्व कुंठा ही है।यथार्थ से संघर्ष करने के कारण मानव अपने आत्म-स्थापन को संतुष्ट नहीं कर पाता और उसमें हीन कुंठा विकसित हो जाती है।

फ्रायड के दूसरे सहयोगी युंग भी इनके मत से असहमत थे। युंग ने फ्रायड की "कामवृत्ति" और एडलर की 'आत्मस्थापन' की प्रवृत्ति दोनों को अपने सिद्धांत में सम्मिलित किया है। युंग बताते हैं कि व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं- पहला वह जिसकी ध्यान और शक्ति अपने पर केंद्रित रहती है, दूसरा वह जिसकी शक्ति सामाजिक और भौतिक वातावरण की ओर प्रकट होती है। अतः हम कह सकते हैं कि पहले प्रकार के व्यक्ति अंतर्मुखी तथा दूसरे प्रकार के बहिर्मुखी होते हैं। अंतर्मुखी व्यक्ति अत्यधिक एकांतप्रिय, कल्पनाशील, भावुक और अव्यावहारिक होते हैं। बहिर्मुखी व्यक्ति व्यवहार कुशल, समाजप्रिय और क्रियाशील अधिक होते हैं।

यह सिद्धांत 20 वीं सदी का अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है इसने कला और साहित्य की दुनिया पर व्यापक प्रभाव डाला। नैतिकता और उसके प्रतिमानों पर एक नवीन समझ प्रस्फुटित हुई और स्वछंद विचारों की एक नई पीढ़ी के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

हिंदी साहित्य में जैनेंद्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि तथा अंग्रेजी साहित्य में डी.एच. लॉरेंस और जेम्स जॉयस के साहित्य में मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

राजस्थान के जोधपुर में जन्मी मनीषा कुलश्रेष्ठ बचपन से ही बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी। आपके साहित्य में राजस्थान की सौंधी मिट्टी की सुगंध झलकती है। आपका साहित्य बनावटीपन से दूरी बनाए हुए  है। आपकी जननी एक शिक्षिका होने के साथ साहित्य प्रेमी भी थी। यही वजह है कि इनका रुझान साहित्य की ओर अग्रसर हुआ। आपने कहानी, उपन्यास, कविता आदि विधाओं में अपनी लेखनी की छाप छोड़ी है। आपकी गद्य- साहित्य की ओर रुचि अधिक परिलक्षित हुई है। आपने अधिकतर अपने कथा-साहित्य में स्त्रियों को केंद्र में रखा और उनकी मनोवैज्ञानिकता के ताने-बाने बुने हैं। उनके कथा-साहित्य में औरतों के साथ चाहरदीवारी के अंदर हो रहे अन्याय दृष्टिगोचर होते हैं। जहाँ अन्याय करने वाले उनके स्वयं अपने ही हैं। इसके अलावा लेखिका ने पुरूषवादी वर्चस्वता, लिंगभेद, पीढ़ीगत मतभेद, यौनकुंठाएं, कला की विलुप्ति तथा क्षेत्रीय मनोविश्लेषणवाद आदि मनोभावों को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

**आपको विभिन्न सम्मानों से सम्मानित किया गया है–**

- चंद्रदेव शर्मा नवोदित प्रतिभा पुरस्कार – वर्ष 1989 (राष्ट्रीय साहित्य अकादमी)
- कृष्ण बलदेव वैद फैलोशिप– वर्ष 2007
- डॉ. घासीराम वर्मा सम्मान – वर्ष 2009
- रांगेय राघव पुरस्कार–वर्ष 2010 (राजस्थान साहित्य अकादमी)
- कृष्ण प्रताप कथा सम्मान– 2011
- गीतांजलि इंडो- फ़्रेंच लिटरेरी प्राइज–2012 ज्यूरी अवॉर्ड
- लमही सम्मान –2013
- रजा फाउंडेशन फैलोशिप–2013
- स्वप्नपाश उपन्यास के लिए 2018 का बिहारी पुरस्कार
- कथाक्रम द्वारा पुरस्कृत कहानी 'क्या यही है वैराग्य'

अन्य:– बहुचर्चित उपन्यास शिगाफ का हायडल वर्ग (जर्मनी) के साउथ एशियन मॉडर्न लैंग्वेजज सेंटर में मनीषा जी ने वाचन किया

- विश्व हिंदी सम्मेलन 2012 जोहानसबर्ग में भागीदारी।
- साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 2006 में पहलगाम में आयोजित अनुवाद कार्यशाला में भागीदारी।
- स्वतंत्र लेखन और इंटरनेट की पहली वेब पत्रिका हिंदी नेस्ट का 21 वर्षों से संपादन।

**प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन-:**

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व उसकी पूरी अवधारणा व उसके प्रत्येक प्रतिमान से परिचित होना पड़ता है। पीएच. डी. में नामांकित होने के पश्चात मैंने बहुत से लेखकों के साहित्य का अध्ययन किया अंततः मैंने मनीषा कुलश्रेष्ठ के साहित्य को पढ़ा जो कि मुझे रुचिकर लगा। आपके साहित्य के पात्र अत्यधिक मनोविज्ञान से जुड़े होने के कारण गहराई तक अपनी छाप छोड़ते हैं। आपके साहित्य का अध्ययन करते समय ही मुझे मनोविज्ञान को गहराई से जानने का अवसर मिला।

मनोविज्ञान की तरफ मेरी अत्यधिक रुचि जागृत होती देखकर मेरी शोध निर्देशिका प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना जी ने प्रस्तुत विषय पर शोध-कार्य करने के लिए मुझे प्रेरित किया। आपका साहित्य यथार्थता के मोतियों में पिरोया हुआ आदर्शवादी साहित्य है। ऐसे साहित्य पर कार्य करना निश्चित ही मेरे लिए प्रेरणादायी है। मैंने अपनी शोध निर्देशिका से चर्चा करने के पश्चात् **"मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा- साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन"** विषय को अपने शोध कार्य के लिए आधार बनाया। विषय की रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना जी ने सहायता की। मैंने अपने विषय से संबंधित सामग्री एकत्रित करने हेतु दयालबाग़ एजुकेशनल विश्वविद्यालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, डॉ भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के अलावा देश के अन्य प्रमुख पुस्तकालयों में भी अध्ययन किया। इसके साथ ही मैंने संचार मीडिया इंटरनेट से भी सामग्री एकत्रित की। अपने गुरुजनों से इस विषय पर शोध- कार्य करने के लिए वार्त्ता की और सभी से वार्त्ता करने के उपरांत **मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन** पर शोध करने का कार्य निश्चय किया।

**प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य–:**

इस अनुसंधान के माध्यम से आधुनिक साहित्यकार मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करके मानव के बदलते परिवेश के कारण जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को अभिव्यक्त करने की सफल कोशिश की गई है। आधुनिक काल की बदलती परिस्थितियों को देखकर मानव मन में कुंठा का जन्म होता है इन कुंठाओं का यदि निवारण न किया जाए तो यह मानसिक व स्नायविक रोगों का रूप ले लेती हैं। जो समाज के लिए अत्यधिक हानिकारक है। लेखिका ने मानव मन की ग्रंथियों को खोलने का सफल प्रयास किया है। इसलिए इनके पात्र चरित्र की दृष्टि से भी कथा साहित्य का विश्लेषण किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में ये बताने की चेष्टा की गई है कि मनोविश्लेषण का प्रभाव हिंदी कथा- साहित्य पर किस तरह पड़ा। इसने उपन्यासों और कहानियों के कथ्य में किस प्रकार परिवर्तन किया। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने मनोविज्ञान का सूक्ष्मता से प्रयोग किया है। पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से कथा साहित्य का विश्लेषण किया जाएगा तथा भाषा एवं शैली की दृष्टि से भी विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य की महत्ता को भी विश्लेषित किया जाएगा। मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं का समग्र रूप से अध्ययन करके मनीषा जी के कथा-साहित्य का

मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करना ही मेरे शोध-कार्य का मुख्य उद्देश्य है। इसके अलावा हिंदी- साहित्य को मनोविज्ञान के साथ जोड़ना भी मेरा एक उद्देश्य है।

**प्रस्तुत शोध विषय का महत्त्व –**

कथा- साहित्य में निहित उपन्यास और कहानी ऐसी विधाएं हैं जो मानव मन के साथ सहजता से जुड़ जाती हैं। कहानी एवं उपन्यास सर्व-साधारण को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होते हैं। समाज में रहने वाला एक सहृदय एवं सुधीपाठक कथा- साहित्य को पढ़कर उसमें अभिव्यक्त प्रश्न एवं उद्देश्य को समझ सकता है।

प्रस्तुत शोध विषय के अंतर्गत "मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य": कहानी संग्रहों एवं उपन्यास जगत में अभिव्यक्त मनोवैज्ञानिकता के विविध आयामों को उठाया गया है। एडलर ने बताया है कि कुंठित व्यक्ति और मस्तिष्क समाज के बेहतर विकास में सहायक नहीं होते। कुंठित मन और मस्तिष्क वाला व्यक्ति समाज को चिंता के सिवाय कुछ नहीं दे सकता।

प्रत्येक व्यक्ति में किसी ना किसी प्रकार की मानसिक या क्रियात्मक कमी पाई जाती है जिसे पूरा करने की निरंतर चेष्टा करने पर भी व्यक्ति में हीनता की भावना बनी रहती है। हीन भावना का विश्लेषण लेखिका ने अपने उपन्यासों और कहानियों में बखूबी दर्शाया है। कह सकते हैं कि समाज अपनी बदलती हुई मानसिकता के साथ कैसे धीरे-धीरे करवट ले रहा है, उन बिंदुओं की कसौटी पर आपका साहित्य खरा उतरता है।

**अनुसंधान पद्धति-**

मानव एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए निरंतर खोज, शोध व अनुसंधान करता रहता है । मानव की यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है।

साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है, क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है।

अनुसंधान की अनेक पद्धतियां प्रचलन में हैं। मेरे शोध कार्य में "**मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन**" किया जाएगा। मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु मनोविश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ ही विवेचनात्मक, वर्णनात्मक , आलोचनात्मक व विवरणात्मक पद्धतियों का अवलंब लिया जाएगा। अंत में संपूर्ण शोध-विषय का निष्कर्ष दिया जाएगा।

**प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य-**

शोध-कार्य हेतु प्रस्तुत शीर्षक **"मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन"** पर पूर्व में कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। मेरे द्वारा विविध विश्वविद्यालयों की शोध सूची पत्रों को भली प्रकार देखा गया। वहां मेरे द्वारा चयनित विषय पर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। मेरे शोध-कार्य के पूर्व मनीषा कुलश्रेष्ठ एवं मनोविश्लेषण पद्धति पर जो शोध कार्य किए गए हैं उसकी सूची दी जा रही है जिसके द्वारा यह निर्धारित होता है कि मेरे द्वारा किया गया शोध-कार्य मौलिक एवं नवीन होगा।

**1. मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा- साहित्य में युगबोध-**

शोध छात्रा- वंदना शर्मा

शोध निर्देशिका – नीलम शर्राफ

जम्मू विश्वविद्यालय

**2. मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में सामाजिक यथार्थ-**

शोध छात्रा – शांति शर्मा

शोध निर्देशिका -राजरानी शर्मा

जीवाजी विश्वविद्यालय, 2020

**3. अज्ञेय के उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन-**

शोध छात्रा- रीता पांडे

शोध निर्देशक -सूबेदार राय

डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद, 2000

**4. प्रसाद के नारी पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन-**

शोध छात्रा -पूनम वर्मा

शोध निर्देशिका -श्रद्धा सिंह

डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद, 2002

**5. इलाचंद्र जोशी के उपन्यास साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन-**

शोध छात्रा – सरोज देवी

शोध निर्देशक –ओ. पी. अवस्थी

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, 2002

**6. जैनेंद्र के उपन्यासों में अहम का साक्षात्कार : एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन**

शोध छात्र- सी. एस. अजीथ कुमार

शोध निर्देशक- सी. एस. राजन

महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, 2005

**7. राजेंद्र यादव के कथा- साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अनुशीलन-**

शोध छात्र -गौरव कुमार झा

शोध निर्देशिका -प्रमिला अवस्थी

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, 2007

**8. फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में जैनेंद्र के उपन्यासों का अध्ययन-**

शोध छात्रा -नम्रता पांडे

शोध निर्देशक -हरिहर सिंह शास्त्री

वी॰ बी॰ एस॰ पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 2013

**9. इलाचंद्र जोशी के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन**

शोध छात्रा- वनीता उप्पल

शोध निर्देशिका -सुमन सिंह

दिल्ली विश्वविद्यालय, 2015

**10. गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन**

शोध छात्रा -मंजू रानी

शोध निर्देशक- पूरनमल गौर

एस॰ आर॰ एम॰ विश्वविद्यालय, दिल्ली एन॰ सी॰ आर॰ सोनीपत, 2018

**प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति-**

शोध विषय का अनुसंधान सुचारु रूप से सम्पन्न कराने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोधकार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय "**मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन"** को पांच अध्यायों में विभक्त किया है जो इस प्रकार हैं-

**प्रथम अध्याय**

मनोविज्ञानः स्वरुप क्षेत्र एवं सिद्धान्त विवेचन-

- मनोविज्ञानः स्वरूप परिभाषा एवं क्षेत्र
- मनोविज्ञान और मनोविश्लेषणवादः पाश्चात्य एवं भारतीय परंपरा
- मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषणः व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य
- मनोविज्ञान और हिंदी उपन्यास

**द्वितीय अध्याय- मनीषा कुलश्रेष्ठ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

- व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक परिचय
- मनीषा कुलश्रेष्ठ का कथा साहित्य : एक सर्वेक्षण

**तृतीय अध्याय**

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

- कहानी साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन- कामवृत्ति का विश्लेषण, निर्देशक, अहंभाव का विश्लेषण, हीनता ग्रंथि, आरोपण या प्रक्षेपण, विस्थापन, मानसिक उदात्तीकरण स्वप्न विश्लेषण, कुंठित मन का विश्लेषण, व्यक्तित्व विघटन का विश्लेषण, बाल मन का विश्लेषण, नारी मन का विश्लेषण, अंतर्द्वंद्व का विश्लेषण, अन्य

**उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन–**

- कामवृत्ति का विश्लेषण, निर्देशक, अहंभाव का विश्लेषण, हीनता ग्रंथि, आरोपण या प्रक्षेपण, विस्थापन, मानसिक उदात्तीकरण स्वप्न विश्लेषण, कुंठित मन का विश्लेषण, व्यक्तित्व विघटन का विश्लेषण, बाल मन का विश्लेषण, नारी मन का विश्लेषण, अंतर्द्वंद्व का विश्लेषण, अन्य

**चतुर्थ अध्याय**

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य की पात्र योजना और चरित्र चित्रण

- कहानी साहित्य की पात्र योजना और चरित्र चित्रण-

अपरिवर्तनशील पात्र, गत्यात्मक पात्र, बहिर्मुखी पात्र, अन्तर्मुखी पात्र, अहम् ग्रस्त पात्र, हीनता ग्रस्त पात्र, कुंठा ग्रस्त पात्र, वासना परिचालित पात्र, जटिल पात्र, मनोरोग ग्रस्त पात्र, अन्य।

- उपन्यास साहित्य के पात्र योजना और चरित्र चित्रण-

अपरिवर्तनशील पात्र, गत्यात्मक पात्र, बहिर्मुखी पात्र, अन्तर्मुखी पात्र, अहम् ग्रस्त पात्र, हीनता ग्रस्त पात्र, कुंठा ग्रस्त पात्र, वासना परिचालित पात्र, जटिल पात्र, मनोरोग ग्रस्त पात्र, अन्य।

**पंचम अध्याय**

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य की भाषा शैली

- कहानी साहित्य की भाषा शैली
- उपन्यास साहित्य की भाषा शैली

**उपसंहार**

**परिशिष्ट**

- आधार ग्रंथ
- उपजीव्य ग्रंथ
- पत्र –पत्रिका
- शब्दकोश/विश्वकोश

**आधार ग्रंथ –**

- **कहानी संग्रह-**

1. बौनी होती परछाई, 2003, मेघा प्रशासन, दिल्ली

2. कुछ भी तो रूमानी नहीं, 2008, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद

3. कठपुतलियां, 2010, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली

4. केयर ऑफ स्वात घाटी, 2012, बोधि प्रकाशन, जयपुर

5. अनामा, 2014, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

6. किरदार, 2018, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

7. गंधर्व गाथा, 2022, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

8. रूप रंग रस गंध खंड एक व दो समग्र (कहानियां) सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

- **उपन्यास-**

1. शिगाफ़, 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

2. मल्लिका, 2019, राजपाल एंड संस प्रकाशन, नई दिल्ली

3. सोफिया, 2021, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

4. शालभंजिका, 2022, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

5. पंचकन्या, 2022, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

6. स्वप्रपाश, 2022, समायिक प्रकाशन, नई दिल्ली

**सहायक ग्रन्थः–**


1. डॉक्टर देवराज उपाध्याय, जैनेंद्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली

2. राम बिलास शर्मा, भाषाः साहित्य और संस्कृति, 1956, किताबमहल प्रकाशन, दिल्ली।

3. डॉक्टर गिरधर प्रसाद शर्मा, हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, 1967, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली

4. हरदेव बाहरी, प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, 1988 विद्या प्रकाशन दिल्ली

5. ज्ञानवती, समकालीन हिंदी कहानीः यथार्थ के विभिन्न आयाम, 1994, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली

6. रेशमी रामहोनी, समकालीन हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में अभिव्यक्ति बहुआयामी विद्रोह, प्रथम संस्करण 2001, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
7. भारत भूषण अग्रवाल, हिंदी उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव 2001, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपति चंद्रगुप्त 2002 लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. डॉ प्रीति वर्मा, डॉ डी.एन. श्रीवास्तव, सामान्य मनोविज्ञान, 2005 विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
10. डॉक्टर हरदयाल, हिंदी कहानी परंपरा और प्रगति, प्रथम संग्रह 2005, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
11. डॉक्टर सबिता चेखोबा किर्ते, आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र, 2007, विनय प्रकाशन, कानपुर
12. धर्मेंद्र वर्मा, हिंदी शब्दकोश, 2010, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
13. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास, 2011, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. डॉक्टर मफतलाल पटेल, जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का मनोविश्लेषण, 2012, शांति प्रकाशन
15. डॉक्टर रामचन्द्र तिवारी, हिंदी गद्य साहित्य, 2014, इस विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
16. डॉक्टर शशिभूषण सिंघल, हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ बिनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
17. डॉक्टर ज्योति, अमर हिंदी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी वादी दृष्टि, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
18. डॉ. कामिनी तिवारी, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श विद्या प्रकाशन, कानपुर
19. कंचन सिंह चौहान, फ्रीक्स की कथाओं का संकलन, कहानी संग्रह, गन्धर्व गाथा
20. डॉक्टर प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी,रेखा कस्तवार, स्त्री चिंतन की चुनौतियां (स्त्री: भारतीय सामाजिक संक्राति)

**पत्र पत्रिकाएं:–**

| | |
|---|---|
| लमही पत्रिका | संचेतना |
| हंस पत्रिका | नया ज्ञानोदय |
| आलोचना | वर्तमान साहित्य |
| आजकल | सामयिक |

**शब्दकोश-**


1. हिन्दी शब्द सागर, संशोधित संस्करण, 1976, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

2. नालन्दा विशाल शब्दसागर, श्री नवल जी, आद्रीश बुक्स डिपो, नई दिल्ली

3. प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोश, 2019, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली

4. प्रभात आधुनिक हिन्दी शब्द कोश, 2014, डॉ. श्याम बहादुर वर्मा, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

5. वर्धा हिन्दी शब्दकोश, 2014, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

6. हिन्दी पर्यायवाची कोश, 2019, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली


**वेब साइट्स:–**

http:\pustaksamikshawebdunia.com

http://hiwikipedia.org.

http://booksgoogle.co.in.